THE HERALD of Christian Science
informal translations from the publications of the Christian Science Publishing Society

कैसे रोग अपनी 'वास्तविकता को खो देता है... और लुप्त हो जाता है'

How disease loses its 'reality... and disappears'

Author: Barbara Vining

The Christian Science Sentinel Volume 117, Issue 29 & 30, July 20 & 27, 2015

हम सब जानते हैं कि परमेश्वर की ओर अपना ध्यान देना कितना मुश्किल हो सकता है जब हमें शारीरिक उपचार की ज़रूरत होती है, और खास तौर पर जब हम दर्द में होते हैं। परन्तु जब हम उपचार के लिए भरसक प्रयत्न कर रहे होते हैं, केवल अपनी सोच को जीवंत परमेश्वर की ओर मोड़ने की एक सरल और ईमानदार इच्छा एक अच्छी शुरूआत है। जैसे मेरी बेकर एडी क्रिश्चियन साँयस की पाठ्य पुस्तक में वर्णन करती हैं, "दिव्य साँयस का प्रारम्भिक मुद्दा है कि परमेश्वर, आत्मा, सर्वेसर्वा है, और कि न कोई और सामर्थ्य है न ही मन, –कि परमेश्वर प्रेम है, और इसलिए वह दिव्य सिद्धांत है" (साँयस एण्ड हैल्थ विद् की टू द स्क्रिपचर्स, पृष्ठ 275)। और निश्चित रूप से प्रेम ही है जिसे हम सहजता से महसूस करना चाहते हैं जब सांतवना और उपचार की ज़रूरत होती है।

जब हम उपचार के लिए भरसक प्रयत्न कर रहे होते हैं, केवल अपनी सोच को जीवंत परमेश्वर की ओर मोड़ने की एक सरल और ईमानदार इच्छा एक अच्छी शुरूआत है।

बाइबल, दिव्य प्रेम को रहस्योद्घाटित करती है हमारे लिए सदा उपस्थित की तरह, और सैद्धांतिक की तरह–सदा विश्वसनीय की तरह–क्योंकि यह कभी नहीं बदलता: "प्रत्येक अच्छा उपहार और प्रत्येक सम्पूर्ण उपहार ऊपर से आता है, ज्योतियों के पिता की ओर से नीचे आता है, जिस में न कोई बदलाव होता है, न ही पलट जाने का दु:ख। उसने अपनी स्वयं की इच्छा से सत्य के वचन द्वारा हमें जन्म दिया है ताकि हम उसकी रचनाओं में प्रथम फल की तरह हों" (याकूब 1:17, 18)। उन "अच्छे उपहारों" में सेहत और पवित्रता शामिल हैं, जिन्हें परमेश्वर ने हमें दिया है, और हम में बनाए रखता है, अपने आध्यात्मिक रूप तथा प्रतिरूप की तरह –उपहार जो कभी नहीं बदलते, अपितु स्थायी, भरोसेमंद हैं, और स्वीकार करने तथा अनुभव करने के लिए हमारे लिए उपलब्ध हैं।

इस प्रकार, हम परमेश्वर की ओर अपने ध्यान को मोड़ कर शुरूआत कर सकते हैं, उसकी उपस्थिति को स्वीकार कर के और उसके लिए आभारी हो कर–चाहे हम उसे अभी महसूस करते हैं या नहीं। मुझे एक समय याद है, क्रिश्चियन साँयस में मेरी रूचि की शुरूआत में, जब मैं दूषित भोजन से अचानक बीमार हो गइ थी। क्रिश्चियन साँयस उपचारक, जिन्हें मैंने मेरे लिए प्रार्थना करने के लिए कहा था, उन्होंने मुझे केवल आभारी होने के लिए कहा। वह करना बहुत अजीब लग रहा था, जब मैं इतने दर्द में थी, जिसके लिए मैं आभारी नहीं हो सकती थी। इसलिए मैंने शुरूआत उसके लिए आभारी हो कर की जो मैं परमेश्वर के बारे में

* जो शब्द बड़े अक्षरों में लिखे गये हैं वह परमेश्वर के समानार्थक शब्द हैं।

For this translation in English and other translations in [Hindi], please see http://translations.christianscience.com

Translation © 2015 The Christian Science Publishing Society
This translation has been performed by Mother Church members in the Field and made available by agreement with The Christian Science Publishing Society. You may reproduce up to 50 print copies of this Article. You may not sell or reprint this Article in another publication without permission of CSPS. You may not post or embed this Article on other websites; instead please link to the Article on the CSPS website.

सीख रही थी, प्रेम होने के नाते। मैंने प्रेम की पवित्र उपस्थिति को स्वीकार करना शुरू किया। और आप जानते हो क्या? परमेश्वर ने मेरे ध्यान को घेर लिया और उसे थामे रखा। अपनी सोच में मैंने आराम और शान्ति महसूस की। जल्द ही मैं सो गई। और सुबह मैं पूरी तरह से स्वस्थ उठी।

मेरे अन्य उपचार भी हुए थे जो उसकी तरह शीघ्र हो गए थे, परन्तु कई बार ऐसा हुआ जब परमेश्वर की उपचारक उपस्थिति को महसूस करने और उसके अनुकूल होने में मैंने ज़्यादा समय लगाया। बात यह है, चाहे, इस सब के बावजूद सदा ऐसे ही होता है–मैंने पाया है कि यह केवल मेरे लिए ही नहीं अपितु किसी के लिए भी सच है जो कोई उपचार के लिए क्रिश्चियन साँयस की ओर मुड़ता है–कि कष्ट इन्सानी मन और अनुभव में फीका पड़ने लगता है जब हम परमेश्वर की उपस्थिति को स्वीकार करके शुरूआत करते हैं, और अपनी सोच को उसकी अच्छाई और सर्व–शक्ति की मान्यता से भरा हुआ रखते हैं।

यहाँ श्रीमती एडी इसकी इस तरह व्याख्या करती हैं: "क्रिश्चियन साँयस का शारीरिक उपचार अब भी वैसे परिणाम देता है, जैसे जीसस के समय में, दिव्य सिद्धांत के संचालन द्वारा, जिसके आगे पाप और रोग इन्सानी चेतना में अपनी वास्तविकता खो देते हैं और उतने ही स्वाभाविक रूप से तथा उतने ही आवश्यक रूप से लुप्त हो जोते हैं जैसे अंधेरा प्रकाश को स्थान दे देता है और पाप सुधार को" (साँयस एण्ड हैल्थ पृष्ठ xi)।

मुख्य वाक्यांश है "दिव्य सिद्धांत के संचालन द्वारा।" यह इन्सानी मन का संचालन नहीं है जिस के द्वारा पाप और रोग अपनी वास्तविकता के आभास को खो देते हैं। अनुभव ने मुझे दिखाया है कि इन्सानी मन रोग को मिटाने के लिए कार्य नहीं कर सकता, चाहे वह कितना भी कठोर प्रयास करे, चाहे वह कितनी बार भी यह कहे, "मैं परमेश्वर से प्रेम करता हूँ, और मैं उसके प्रति वफादार हूँ"–क्योंकि रोग इन्सानी मन को बहुत वास्तविक लगता है जब तक कि वह दिव्य मन को समर्पण न कर दे।

न ही इन्सानी मन स्वयं को परमेश्वर को समर्पित करने का निश्चय कर सकता है। इसे पवित्र सम्मान में परमेश्वर के आगे झुकना होगा। हाँ, पवित्र सम्मान! जितना अधिक हम परमेश्वर की पवित्र उपस्थिति में खड़े होने की समझ को ग्रहण करते हैं, उतना अधिक हम अपनी चेतना में कार्य करते हुए दिव्य सिद्धांत के संचालन या उसकी प्रेममयी क्रिया को महसूस करते हैं।

इसी समय तुम पवित्र भूमि पर खड़े हो। अपनी सोच को दिव्य प्रेम के आगे सम्मान में झुकने दो। इस प्रेम को अपनी चेतना का प्रतिनिधित्व करने दो। अपनी सोच को इस में धुल जाने दो। अपने लिए परमेश्वर के प्रेम के प्रति सम्पर्ण कर दो। और किसी भी प्रकार का रोग जो तुम्हारा ध्यान खींच रहा है, वह अब और अधिक नहीं करेगा, क्योंकि वह तुम्हारी सचेत जागरूकता और परमेश्वर के प्रेम में अपनी वास्तविकता खो देगा। और यह स्वाभाविक रूप से तुम्हारे अनुभव से लुप्त हो जाएगा।

Translation © 2015 The Christian Science Publishing Society
This translation has been performed by Mother Church members in the Field and made available by agreement with The Christian Science Publishing Society. You may reproduce up to 50 print copies of this Article. You may not sell or reprint this Article in another publication without permission of CSPS. You may not post or embed this Article on other websites; instead please link to the Article on the CSPS website.